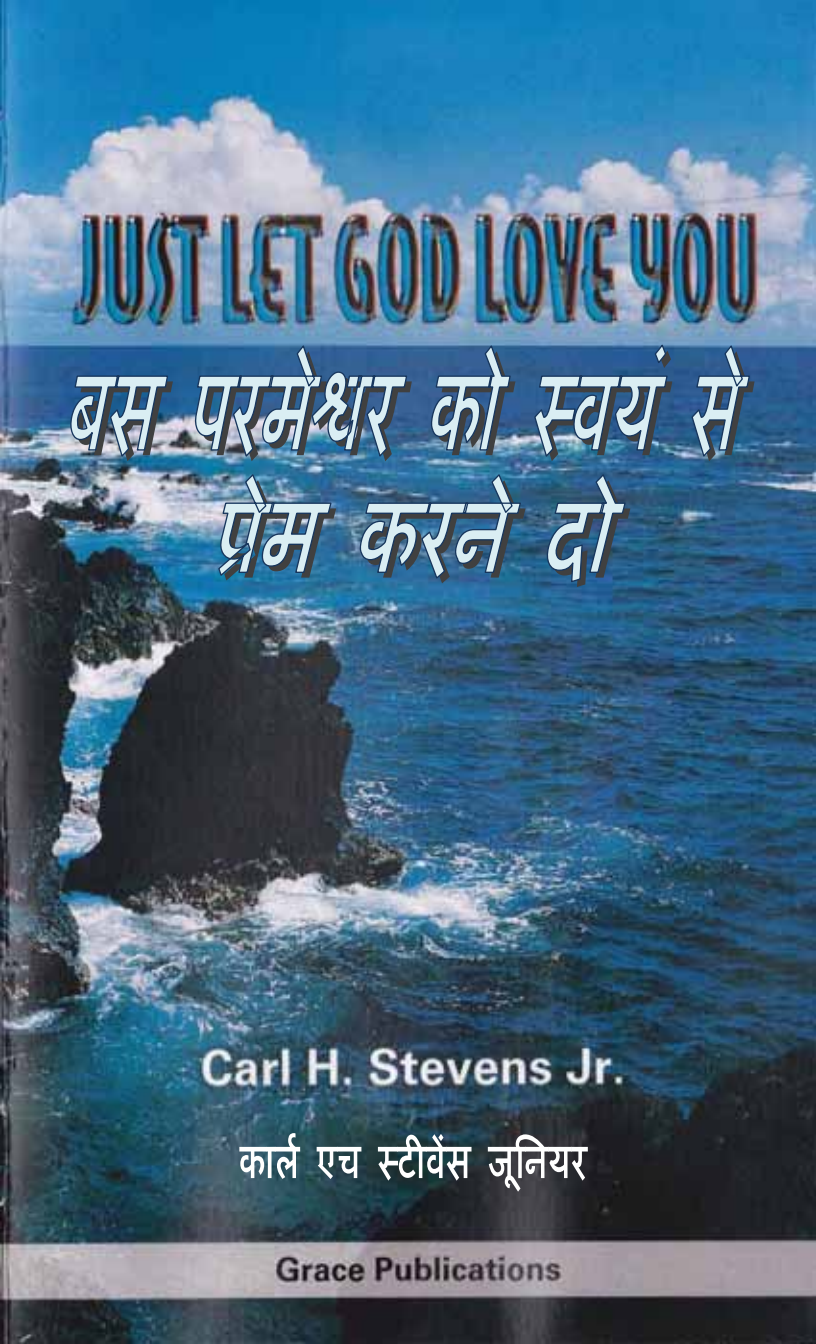
JUST LET GOD LOVE YOU
बस परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने दो
Carl H. Stevens Jr.
कार्ल एच स्टीवेंस जूनियर
Grace Publications

बस परमेश्वर को

स्वयं से प्रेम करने दो

कार्ल एच स्टीवेंस जूनियर

स्वर्गीय कार्ल एच स्टीवेंस जूनियर सन २००५ तक ग्रेटर ग्रेस वर्ल्ड आउटरीच बाल्टीमोर, मेरीलैंड के संस्थापक पास्टर थे| उन्होंने चार दशकों में फैली अपनी सेवकाई के दौरान अमेरिका और विभिन्न देशों में अदभुत सेवकाईयों की स्थापना में खास भूमिका निभाई की। सन २००८ में पास्टर स्टीवेन्स की मृत्यु हुई| अपनी आम सेवकाई के दौरान उन्होंने बाल्टीमोर में मैरीलैंड बाइबिल कॉलेज एण्ड सेमिनरी की स्थापना और "द ग्रेस ऑवर" का विकास किया, जो एक एंजेल पुरस्कार अर्जित रेडियो टॉक शो है और आज भी उत्तरी अमेरिका में विभिन्न मसीही स्टेशनों और इंटरनेट के माध्यम से सुना जाता है।

यह पुस्तिका पास्टर स्टीवेंस द्वारा प्रचार किये गए एक संदेश से बनाई गई है।

जब तक अन्यथा न विस्तृत किया जाए, सभी कथन पवित्र शास्त्र बाइबल से हैं। जोर देने के लिए इटैलिक्स हमारी ओर से हैं।

GRACE PUBLICATIONS
6025 MORAVIA PARK DRIVE
BALTIMORE, MD 21206
कॉपीराइट © 1996
ग्रेस पब्लिकेशन ग्रेटर ग्रेस वर्ल्ड आउटरीच की एक सेवकाई है।

www.ggwo.org

हिन्दी अनुवादों का प्रकाशन
ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च
www.vashichurch.com

सामग्री की तालिका

भूमिका. ५

अध्याय १. . . . . ७
जबकि हम अभी पापी ही थे

अध्याय २. . . . . .१०
बस जैसे तुम हो

अध्याय ३. . . . . १४
प्रेम नई शुरुआत करता है

अध्याय ४. . . . . १८
परमेश्वर के प्रेम में कोई अगर नहीं

निष्कर्ष. २६

रविवार की प्रार्थना सभा स्थल :

अथवा निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें :

ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च
ग्राउन्ड फ्लोर, मेघालय हॉउस,
सेक्टर – ३०ए, वाशी स्टेशन के
सामने, वाशी, नवी मुम्बई

कीमत – २५ रुपए

भूमिका

कौन सी ताकत है जो हमें दुनिया की किसी भी चीज़ से बढकर चंगा कर सकती है? शारीरिक रूप से चंगा होने के लिए हम सबकुछ करते हैं| हम अच्छे होने के लिए सबकुछ करते हैं| लेकिन चंगाई के लिए सबसे बड़ी ताकत के विषय में कितनी गलतफहमी है|

हर व्यक्ति के जीवन की सबसे बड़ी ज़रूरत यह है : परमेश्वर द्वारा प्रेम किया जाना| क्या तुम्हें पता है कि दूसरी ज़रूरत क्या है? मैं तुम्हें बताता हूँ : यह है परमेश्वर द्वारा प्रेम किया जाना| और मैं तुम्हें बताऊँगा कि तीसरी ज़रूरत क्या है| यह है परमेश्वर द्वारा प्रेम किया जाना|

क्या मैंने यह बात साफ़ कर दी?

"प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४:१०)

"हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहले उस ने हम से प्रेम किया।" (१ यूहन्ना ४:१९)

मैं चाहता हूँ कि तुम जानो कि परमेश्वर का प्रेम यहाँ सबसे पहले था, इसलिए हर तरीके की चंगाई के लिए सबसे पहली आवश्यकता है – बिलकुल जैसे तुम हो वैसे

ही परमेश्वर के द्वारा प्रेम किए जाओ| बिलकुल जैसे हम हैं वैसे ही परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, और जैसे हम हैं वैसे ही वह हमसे प्रेम करता जाता है| और परमेश्वर का प्रेम कभी भी बदलाव की माँग नहीं करता, बल्कि बदलाव पैदा करता है|

यदि तुम इन पन्नों में जो कहा जा रहा है वह समझ सके, तो उसका प्रेम तुम्हारे व्यक्तिगत जीवन में, दोस्तियों में, तुम्हारी शादी में और तुम्हारे परिवार में बहुत बदलाव पैदा करेगा|

अध्याय एक
जब हम पापी ही थे

"क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी साहस करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियो ५:६-८)

यीशु मसीह ने हमारे लिए अपने प्रेम को मरने के द्वारा प्रगट किया। एक पल के लिए कल्पना करो। उसने न केवल हमें प्रेम किया, उसने इसके बारे में कुछ किया। हमने कुछ भी नहीं किया। हमने पश्चाताप नहीं किया ताकि परमेश्वर को हमसे प्रेम करा सकें। उसने हमारे पश्चाताप के बिना ही हमसे प्रेम किया। क्या मैं यह सुझाव दे रहा हूँ कि हम पाप में जी सकते हैं? नहीं, मैं नहीं दे रहा हूँ। मैं कह रहा हूँ कि परमेश्वर का प्रेम बदलाव पैदा करता है, लेकिन कभी बदलाव की माँग नहीं करता।

तुम बस जैसे हो वैसे ही परमेश्वर के द्वारा प्रेम किये जाओ। परमेश्वर से प्रेम करने की कोशिश मत करो। दूसरों से प्रेम करने की कोशिश मत करो। जिस पल तुम कोशिश करोगे, असफल हो जाओगे। बस परमेश्वर द्वारा प्रेम किये

जाओ। इस प्रेम को ग्रहण करो जो तुम्हें कभी धोखा नहीं दे सकता, इस प्रेम को जो कभी तुम्हारी ओर नहीं बदलेगा।

वह प्रेम में विश्राम करता है

"तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा।" (सपन्याह ३:१७)

यीशु मसीह ने हमारे पापों का भुगतान करने के लिए अपना रक्त बहाया और क्रूस पर मारा गया। वह दफन किया गया और वह फिर से जी उठा और स्वर्ग चला गया। इस वजह से, परमेश्वर अब हमेशा के लिए हमारी ओर अपने प्रेम में विश्राम करता है। इसीलिये रोमियो ९:१६ हमें बताता है कि उसका प्रेम "उस पर नहीं जो चाहता है, और न ही उस पर जो दौड़ता है, बल्कि परमेश्वर पर, जो दया दिखता है" निर्भर है। यूहन्ना १:१२ कहता है, "जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दे दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।" उसने हमें अपनी स्वयं की मर्ज़ी से "सत्य के वचन" (याकूब १:१८) के द्वारा जनमा है।

बुरे सम्बन्ध अच्छे किये गए

मैं बिलकुल व्यावहारिक बात कहता हूं। मैं एक बुरे सम्बन्ध के साथ क्या सलूक कर सकता हूँ? उसके बारे में चिंता करके? खुद की निंदा करके? उसके बारे में दोषी

महसूस करके? अपनी देह में एक उचित प्रदर्शन करके (गलातियों ६:१२)? नहीं। जब एक सम्बन्ध खराब होता है, तब मैं बस परमेश्वर के वचन को सच होने देता हूँ और उसे मुझसे प्रेम करने देता हूँ।

अगर मैं असफल होता हूँ, मैं परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने देता हूँ। मुझमें बदलने की शक्ति नहीं है; मैं परमेश्वर को मुझे बदलने देता हूँ। क्या उसका प्रेम विफल होता है? नहीं, बिलकुल नहीं होता। क्या वह बदल जाएगा? नहीं, वह नहीं बदलेगा।

अध्याय दो
बस जैसे तुम हो

एक व्यक्ति ने हाल ही में मुझे टेलीफोन किया। वह एड्स का वायरस पाए जाने की वजह से बहुत ही बुरी हालत में है। वह पंद्रह साल में तीन बार अपनी कमजोरी के द्वारा गिरा है। तीसरी बार उसे एचआईवी हो गया, और वह मरना चाहता है। जब उसने इसके बारे में अपनी पत्नी को बताया तब वह बहुत शर्मिन्दा था।

लेकिन वह क्या कर सकता है? वह पहले ही उसने जो किया है उससे नफरत करता है। फिलहाल, इस व्यक्ति को परमेश्वर के द्वारा स्वयं से उतना ही प्रेम करने देने की जरूरत है जितना एचआईवी के पता लगने के पहले वह करता था।

परमेश्वर को हमसे प्रेम करने देना अराजकता नहीं पैदा करता। इसके विपरीत, यह हमें अभक्ति को इन्कार करना और हमारे दिलों में परमेश्वर के वचन को बहुतायत से निवास कराते हुए चुपचाप जीना सिखाता है।

सबसे खूबसूरत बात यह है कि तुम जैसे हो उसमें ही परमेश्वर को तुमसे प्रेम करने दो। मेरा उस वाक्य को दुहराने का एक कारण है, क्योंकि परमेश्वर को तुमसे प्रेम करने देना इकलौता तरीका है जिससे स्मृति और प्राण चंगे हो सकते हैं। केवल परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने देना

ही आत्म-छवियों और व्यवहारों के बदलाव हो सकने का रास्ता है। कारण बहुत सरल है क्यों कुछ पुरुष अपनी पत्नियों को ठीक से प्रेम नहीं कर पाते हैं: वे नहीं समझते कैसे परमेश्वर के द्वारा प्रेम किये जाएँ।

उसके पुत्र के स्वरूप में बदला जाना

"और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।" (रोमियो ८:२८-३०)

उसके पूर्वज्ञान में, परमेश्वर जानता था कि मेरी स्वतन्त्र इच्छाशक्ति के द्वारा मैं उसके पुत्र पर विश्वास करना चुनूँगा। मैं धर्मी ठहराया गया, पवित्र बनाया गया, और महिमा मंडित किया गया क्योंकि परमेश्वर हमेशा मेरी ओर था। और वह मेरी ओर अपने प्रेम में विश्राम करता है क्योंकि मेरे पापों के लिए पुत्र द्वारा भुगतान किया गया।

किसी और चर्च के एक व्यक्ति ने मुझे टेलीफोन किया। उन्होंने कहा, "मैंने तुम पर हमला किया है, मैंने तुमसे नफरत की है, और मैंने परमेश्वर से लड़ाई की है। उन्तीस

वर्ष की उम्र में मैं मर रहा हूँ और मैं पश्चाताप करना चाहता हूँ।"

मैंने कहा, "केवल एक चीज में मेरी दिलचस्पी है कि तुम परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने दो।"

उन्होंने कहा, "मुझे एड्स है। मैं मरने वाला हूँ।"

"बस प्रेम पाओ, परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने दो," मैंने उसे कहा, "जिस हालात में तुम हो, बस प्रेम पाओ।"

उसने गलत किया था, लेकिन एक ही बात की उसे जरूरत थी कि वह परमेश्वर के द्वारा प्रेम किया जाए। मैं उसे प्रतिदिन मिलने जाता रहा और उसे बताता रहा, "परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने दो।" बारह सप्ताह के भीतर वह आदमी अस्पताल के बाहर था, और अतीत में वह जिस चर्च से नफरत करता था उसी में उसे बपतिस्मा दिया गया। परमेश्वर ने उसे बदल दिया। इस आदमी के विचार, भावनाएँ, और निर्णय अब परमेश्वर के वचन के अनुसार व्यक्त हो रहे थे। उसका दिल बदल गया था; तब उसका प्राण बदल गया; और तब उसका मन बदल गया। वह अपनी पत्नी जिससे कई वर्षों तक लड़ता रहा था, उससे प्रेम करने लगा; और उसने अपनी दोनों बेटियों को प्रेम करना आरम्भ कर दिया। जैसे जैसे उसने चर्च से प्रेम करना शुरू किया, वह खोए हुओं से प्रेम करने लगा।

इस आदमी की मुख्य बात यह थी कि वह खुद से प्रेम नहीं करता था। अंदरूनी रूप से वह खुद से प्रेम नहीं कर पाता था, और उसे नहीं लगता था कि परमेश्वर उससे प्रेम

करता है। उसने चर्च में गवाही दी कि उसका शरीर चंगा हो गया। परमेश्वर की मर्जी में प्रेम ऐसा कर सकता है। प्रभु ने बदलाव की माँग नहीं की, बल्कि उसने अपने प्रेम के द्वारा बदलाव पैदा किया।

जितना अधिक मैं खुद को परीक्षण में डाले बिना परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने देता हूँ, जितना अधिक मैं असफलता के डर के बिना परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने देता हूँ, जितना अधिक मैं दूसरों की ओर आक्रोशित और गुस्सा हुए बिना परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने देता हूँ, तो उतना ही अधिक मेरे जीवन में सब कुछ चंगा हो जाता है। परमेश्वर की प्रभुता में, मैं चंगा हो जाऊँगा, फर्क नहीं पड़ता कि समस्या क्या है। मेरा दिल, मेरा प्राण, और मेरी भावनाएँ, बस परमेश्वर को मुझसे प्रेम करने देने से चंगे हो जाएँगे।

अध्याय तीन
प्रेम नई शुरुआतें करता है

बारह वर्षीय एक लड़की अपने दिल दहलाने वाले घरेलू जीवन के विषय में मेरे पास आई। उसके माता पिता शायद ही कभी घर पर होते थे; उनमे से एक सप्ताहांत पर बाहर निकल जाता था। चिल्लाना और लड़ना आम बात थी। वहाँ शराबीपन था। उसने मुझसे कहा, "मैं घर जाने से डरती हूँ क्योंकि मैं नहीं जानती कि मैं क्या करूं। आप मेरे पास्टर हैं, क्या आप मेरे घर आ सकते हैं?"

मैं उस घर को गया। बहुत अनोखे तरीके से, लड़की ने अपने पिता से कहा: "मैं चाहती हूँ कि आप पास्टर की बात सुनें।" तो मैं उससे बात करने लगा। "क्या तुम्हें पता है कि हजारों साल पहले, यीशु जानता था कि मैं आज परमेश्वर के सेवक के रूप में यहाँ आऊँगा?" मैंने उसे बताया, "महोदय, अगर मैं शब्दों में बयान कर पाता कि परमेश्वर तुमसे इस वक्त कितना प्रेम करता है, तो मैं ज़रूर करता। यदि मैं उसके प्रेम को शब्दों में डाल पाता और अगर तुम संभवतः उस पर विश्वास कर पाते, तो इस घर में चीजें बदल जातीं।"

उसने मुझे बताया कि वह परिवार कितना बेकार और विनाशकारी था। "यह सच है," मैंने कहा। "लेकिन पहले मैं चाहता हूँ कि तुम परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने दो,

दोषारोपण के बिना। मैं तुम्हें अपनी पीने की आदतों में बदलाव लाने के लिए भी नहीं कहूँगा। बस परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने दो।" वह वहीं एक बच्चे की तरह रोया।

उस रात, चर्च के बाद, हम बाहर गए और उस आदमी ने यीशु मसीह को स्वीकार किया। उसने फिर कभी शराब नहीं पी। बाद में, उसकी पत्नी ने उद्धारकर्ता को स्वीकार किया। उन्होंने एक साथ बपतिस्मा लिया और उस बारह वर्षीय लड़की के लिए वह उसके जीवन का खास दिन था। परिवार ने अपनी तस्वीर खिंचवाई और मुझे दी। कितनी अदभुत गवाही है इस बात की, कि परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने देना क्या कर सकता है।

विगत को भूलना

मैं उस घर में इसलिए नहीं गया कि चर्चा कर सकूं कि पिता कितना बुरा था। आनुवंशिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से जो हालातें थी, हम उनके तरह तरह के कारण खोज सकते थे। लेकिन मैं वहाँ यह कहने गया कि परमेश्वर ने उस व्यक्ति को अपनी छवि में बनाया था और उसे यह बताने कि परमेश्वर उस क्षण में उसके साथ कितने प्रेम में था। पापों की कोई चर्चा नहीं की गई। मैंने परमेश्वर के प्रेम को पश्चाताप पैदा करने का मौका दिया। उस छोटी लड़की का पिता बदला गया और उसे एक बिलकुल नई शुरुआत दी गई।

परमेश्वर के प्रेम ने एक नई आत्म छवि को पैदा किया।

परमेश्वर के प्रेम ने एक नई जागरुकता को पैदा किया।
परमेश्वर के प्रेम ने विश्वास को पैदा किया।
परमेश्वर के प्रेम ने आशा को पैदा किया।
परमेश्वर के प्रेम ने करुणा को उजागर किया।
परमेश्वर के प्रेम ने अनुग्रह को उजागर किया।

इन माता पिता ने उसके प्रेम को व्यक्तिगत बनाया। उन्होंने इसे आन्तरिक बनाया। परमेश्वर का प्रेम उन्हें प्रदान किया गया, और यह उनका एक हिस्सा बन गया। क्या यह किसी अचरज की बात है कि १ कुरिन्थियों १३:८ कहता हैं कि प्रेम कभी निष्फल नहीं होता?

प्रकाश में आगे लाए गए

"मैं ने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है, इस कारण मैं उस समय तक उसके क्रोध को सहता रहूंगा जब तक कि वह मेरा मुकद्दमा लड़कर मेरा न्याय न चुकाएगा। उस समय वह मुझे उजियाले में निकाल ले आएगा, और मैं उसका धर्म देखूंगा।" (मीका ७:९) जब नबी मीका यह लिख रहा था, तब वह नीचा महसूस कर रहा था। उसने पाप किया था, लेकिन वह अपनी ओर परमेश्वर के प्रेम को समझता था। वह जानता था कि परमेश्वर उसके साथ ठीक वहाँ नीचे था। मीका जानता था कि वह प्रेम की रोशनी की वजह से वापिस आएगा और वह क्षमा प्राप्त करेगा।

परमेश्वर का प्रेम आश्वस्ति देता है कि परमेश्वर तुम जैसे हो उसी हालत में तुम्हें प्रेम करता है, बिना शक्ति के एक पापी के रूप में। जब तुम धर्मभ्रष्ट हो, तब यह तुमको

धर्मी ठहराता है (रोमियो ४:५)। यह तुम्हें व्यवस्था और कर्मों के बाहर धर्मी बनाता है (रोमियो ४:६)। यह तुम्हें पवित्र बनाता है। अपने प्रेम के द्वारा, यीशु तुम्हारे लिए "धार्मिकता, और पवित्रीकरण, और छुटकारा" बनाया गया (१ कुरिन्थियों १:३०)। परमेश्वर का प्रेम आश्वस्ति देता है कि तुम पर किसी अन्य पाप का कभी इलज़ाम नहीं लगाया जाएगा। वो यह भी आश्वस्ति देता है कि अगर तुम पाप में जारी रहे, तो परमेश्वर का प्रेम प्रेम की *वजह से*, न कि प्रेम के बाहर, तुम्हारा अनुशासन करेगा। अनुशासन रक्षा के लिए, मसीह का मन प्रदान करने के लिए, और अंततः आशीर्वाद के लिए आता है।

अध्याय चार
परमेश्वर के प्रेम में कोई अगर नहीं

"यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है; हाँ, मैंने तुझ से एक सनातन प्रेम से प्रेम किया है; इस कारण मैं ने अपनी करुणा से तुझे खींचा है।" (यिर्मयाह ३१:३)

जब परमेश्वर ने यह कहा, तब इसराइल देश मूर्तियों की पूजा कर रहा था। उसने यह नहीं कहा, "मैं तुमसे प्रेम करूँगा अगर तुम सुधर जाओगे।" उसने यह नहीं कहा, "मैं तुमसे प्रेम करूँगा अगर तुम मूर्तियों की पूजा बन्द कर दोगे।"

नहीं, परमेश्वर ने कहा, "मैंने तुमको एक चिरस्थायी प्रेम से प्रेम किया है।" हमारे संबंधों में कितने सारे "अगर" होते हैं – इतने सारे "अगर" कि मानसिक और भावनात्मक चंगाई में बाधा लाते हैं, और कभी कभी शारीरिक चंगाई रोक देते हैं। परन्तु परमेश्वर यह नहीं कहता, "मैं तुम्हें प्रेम करूँगा *अगर* .....।" वह कहता है, "मैंने तुम्हें प्रेम किया है, यहाँ तक कि तब भी जब तुम 'कहीं दूर' थे।"

जब गुमराह पुत्र "कहीं दूर" दूर देश में था, तब क्या पिता ने अपने पुत्र से उतना ही प्रेम नहीं किया जितना तब करता था जब वह बिलकुल घर में था? हाँ, उसने किया। पिता का प्रेम तब भी नहीं बदला जब गुमराह पुत्र

पाप में जी रहा था। उसका प्रेम बस धैर्यपूर्वक अपने बेटे को अनुग्रह देने का इन्तज़ार करता रहा। जब उसकी इच्छाशक्ति ने फैसला किया कि घर वापिस जाने का समय आ गया है, बस वह जैसा ही था वैसे ही गुमराह पुत्र ने क्षमा और शुद्धीकरण प्राप्त किया। पिता ने उसे एक अंगूठी, एक बागा, नए जूते दिए और घर में स्वागत का एक समारोह किया। उन्होंने उत्सव के लिए मोटा बछड़ा मार डाला, और यह सब इस वज़ह से हुआ क्योंकि बेटा जिस अवस्था में था उसी में घर लौट आया (लूका १५:११-२४)।

समाज में जो कुछ हुआ है उसके बारे में सोचो। आजकल चल रहे पाप की गहराइयों पर विचार करो। परिवारों और व्यक्तियों में हो रही भयानक विकृति पर विचार करो। आजकल चल रही सब बातों के बीच मानव जाति की सबसे बड़ी जरूरत यह समझना है कि परमेश्वर हमें कितना प्रेम करता है। पाप से निपटना सबसे विशाल मुद्दा नहीं है। परमेश्वर तुम्हें कितना प्रेम करता है, उसके साथ निपटो; और परमेश्वर का प्रेम पाप के साथ निपटेगा। परमेश्वर का प्रेम बदलाव पैदा करेगा।

दिल में उड़ेला गया

"और आशा से लज्ज़ा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में उड़ेला गया है।" (रोमियो ५:५)

पवित्र आत्मा परमेश्वर का प्रेम दिल में उड़ेलता है और प्रेम पवित्र आत्मा का फल है। जब मैं उसका प्रेम ग्रहण

करता हूँ, जिसका वास्ता सिर्फ उसके मेरी ओर के प्रेम के साथ है, तो मुझमें परमेश्वर की मनोवृत्ति कार्यभार ले लेती है। तब उसका स्वभाव आ जाता है। सम्भव है कि मैं यह एहसास भी नहीं कर रहा हूँ, लेकिन उसकी प्रकृति के आने और मेरे साथ समागम और संगति शुरू करने के द्वारा मैं इसे प्राप्त करता जाता हूँ। और परमेश्वर का स्वभाव कभी पाप नहीं करता है।

दिशा बदलना

"जिनमें तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इनमें हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।

"*परन्तु* परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है), और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।" (इफिसियो २:२-६)

तुम किसमें चल रहे हो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अतीत के समय में, हम सब इस दुनिया की रीति के अनुसार चलते थे। अवज्ञा के संतानों के रूप में हम सब

हवा की शक्ति के राजकुमार द्वारा नियंत्रित थे। परन्तु दया में समृद्ध, अनुग्रह में समृद्ध परमेश्वर के पास एक महान प्रेम है, "जिससे उसने हमें प्रेम किया" (इफिसियो २:४)। और उस प्रेम के द्वारा परिवर्तन आते हैं। हर विश्वासी के लिए, परमेश्वर का प्रेम हमारी तरफ था। हमें कितना प्रेम किया गया, यह पता लगने पर हम यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार में आए। वह हमारे जीवन में आया; और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का प्रेम आन्तरिक और व्यक्तिगत हो गया।

प्रेम की लहरें हर दिन तुम्हारे शरीर की कोशिकाओं में प्रवाह कर सकती हैं। यह मानवीय भावना नहीं है; यह ईश्वरीय प्रेम है।

"मैंने सही नहीं किया है" तुम कहते हो।

तुमने जो गलत किया है उसके लिए बस परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करो।

"मैं आत्मिक नहीं महसूस करता।"

प्रेम स्वीकार करो भले ही तुम कुछ भी महसूस नहीं करते।

बस उसका प्रेम ग्रहण करते रहो, और यह केवल प्रेम नहीं बल्कि आनन्द, शांति, सहनशीलता, धीरज, ईश्वरीय भलाई, सज्जनता, विश्वासयोग्यता, नम्रता, और संयम भी पैदा करेगा।

प्रेम का आसान जूआ

"हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" (मत्ती ११:२८-३०)

क्या तुम्हें पता है कि उसका जूआ क्या है? यह प्रेम है। जब मैं अपने ऊपर उसका जूआ लेता हूँ, मैं तो बस अपने ऊपर उसका प्रेम लेना चुन रहा हूँ। "प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने पुत्र को भेजा। ...हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उसने हमसे प्रेम किया।" (१ यूहन्ना ४:१०, १९) कोई आश्चर्य नहीं है कि उसका जूआ आसान है। कोई आश्चर्य नहीं है कि उसके बारे में सीखना मेरे प्राण में विश्राम पैदा करता है। पिता अपने प्रेम में विश्राम कर रहा है (सपन्याह ३:१७)। मैं जूआ लेता हूँ। मैं यीशु को मुझे, बस जैसा हूँ वैसे में ही, प्रेम करने देता हूँ। और फिर वह मुझमें अपने प्रेम की शक्ति, प्रेम की गतिशीलता, प्रेम के विश्वास, कृपा, और उपस्थिति के कारण परिवर्तन पैदा करता है। अंत में, परिवर्तन आता है और मैं चंगा हो जाता हूँ।

पहले अपने आप को प्रेम करो

परमेश्वर के प्रेम का एक क्रम है। मुझे पहले दूसरों को प्रेम नहीं करना है; मुझे पहले अपने आप को प्रेम करना है। मैं परमेश्वर से भी तब तक प्रेम नहीं कर सकता जब तक मैं स्वयं से प्रेम न करूं। मुझे परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने देना होगा। यह इसी तरीके से होता है। सबसे पहले, मैं परमेश्वर को मुझसे प्रेम करने देता हूँ। दूसरा, मैं अपने आप को प्रेम करता हूँ। तीसरा, मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ और अंततः, मैं तुम्हे और बाकी सब को - मेरे दुश्मन को भी, प्रेम करने के लिए अत्यंत स्वतंत्र होता हूँ।

जब तुम अपने आप को प्रेम करते हो, तब एक नई आत्म-छवि, एक नई आत्म-जागरूकता आती है। तुम विशेष होने की एक नई भावना, और मसीह के लहू द्वारा पवित्रीकरण के कारण परमेश्वर के समक्ष धर्मी बनाए जाने का एक नया आभास ग्रहण करते हो। तुम्हारे और परमेश्वर के बीच कुछ नहीं होता है। तुम्हारे और किसी और के बीच कुछ भी नहीं होता है। तुम्हे प्रेम किया गया है और तुम पवित्र आत्मा की शक्ति में प्रेम करते हो। मैं भावुकता या दैहिकपन के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ, मैं उसके बारे में बात कर रहा हूँ जिसका बाइबल वर्णन करती है, उस प्रेम के बारे में जो हमसे परमेश्वर ने किया, जब हम पापी थे।

ओह, क्या यह किसी अचरज की बात है कि दाऊद ने कहा कि प्रभु की करुणाएं महान हैं (२ शमूएल २४:१४)? क्या यह किसी अचरज की बात है कि पतरस ने उसे "सारे

अनुग्रह का परमेश्वर" (१ पतरस ५:१०) कहा? पॉलुस ने उसे "दयाओं का पिता, सारी सान्त्वनाओं का वह परमेश्वर" (२ कुरिन्थियों १:३) कहकर पुकारा।

"इब्राहीम," परमेश्वर ने कहा, "तुमने मुझसे तेरह साल के लिए बातें नहीं की, लेकिन मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

"याकूब। तुम बीस साल के लिए दूर चले गए और पीछे हट गए। लेकिन मैं अभी भी तुमसे प्रेम करता हूँ और मैं तुम्हारा उपयोग करूँगा (उत्पत्ति ३२)।"

"गिद्दोन। तुम छुप रहे हो और तुम इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहते," वह कहता है, "लेकिन मैं तुमसे जहाँ तुम हो वहीं प्रेम करता हूँ। मैं तुम्हारे डर को शान्त करूँगा और एक महान विजय लाऊँगा (न्यायियों ६)।"

"शिमशोन। तुमने दलीला के साथ गलत किया। लेकिन मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। अब अपनी शक्ति वापस लो और अपने दुश्मनों को नष्ट करो (न्यायियों १६)।"

"पतरस। तुमने मुझे नकारा और वह करते हुए तुमने मुझे अपशब्द भी कहे। सार्वजनिक रूप से तुमने मुझे छोड़ दिया, लेकिन मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। पवित्र आत्मा के तुम पर आने के बाद तुम बड़ी भीड़ को यह महान सन्देश प्रचार करोगे (प्रेरितों के काम १)।"

"पॉलुस। तुमने मसीहियों की हत्या की। तुमने स्तिफनुस का पत्थरवाह होते गौर से देखा। फिर भी, मैंने तुम्हें प्रेम किया। मैंने तुम्हें उद्धार दिया और मैं तुम्हे

अन्यजातियों के बीच पराक्रम से उपयोग करूंगा (प्रेरितों के काम २२)।"

यूहन्ना १३:१ में, बाइबल कहती है कि उसने "उन्हें अन्त तक प्रेम किया।" इसका क्या मतलब है? अन्त? इसका मतलब यह है कि यीशु मसीह के उसके चेलों के लिए प्रेम को कोई भी चीज़ नहीं बदल सकी। वे वापस चले गए। उन्होंने उसका इन्कार कर दिया। उन्होंने उसे तब छोड़ दिया जब उसे उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी, लेकिन उससे उसका प्रेम नहीं बदला। वह उनसे अन्त तक प्रेम करता रहा, वैसे ही वह तुम्हें और मुझे भी अन्त तक प्रेम करता रहेगा।

निष्कर्ष

"और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।" (फिलिप्पियों १:६)

यदि तुम पाप में फंसे हुए हो, तुम जहाँ हो वहीं परमेश्वर को तुमसे प्रेम करने दो, और उसे अपने जीवन में एक शुद्ध परिवर्तन पैदा करने दो। मुद्दा सिर्फ उसके प्रेम के प्रत्युत्तर देने का है, बस इतना ही। मेरी सिर्फ इतनी उम्मीद है कि इन शब्दों ने तुम्हे उसे स्वयं से प्रेम करने देने और आगे बढ़ते जाने के लिए उकसाया हो।

परमेश्वर प्रेम है। वह पूरा क्षमाशील है। मुझे माफ कर दिया गया है, तुम्हें माफ कर दिया गया है। हमें शुद्ध किया गया है, विश्वास के द्वारा शुद्ध। उसका प्रेम कभी असफल नहीं होता और हमें बदलने में कभी असफल नहीं रहता है। उससे बढ़कर, उसका प्रेम हमारे माध्यम से दूसरों को बदलने में कभी असफल नहीं होगा। यह इस दुनिया में सबसे गतिशील शक्ति है; तो चलो इसे खुला छोड़ दें!

परमेश्वर सच में तुम्हारी परवाह करता है

यीशु तुमसे गहरा प्रेम करता है। बहरहाल, यह तथ्य कि सभी ने पाप किया है, हमें परमेश्वर से अलग करता है (रोमियो ३:२३; ६:२३)। फिर भी, परमेश्वर तुम्हारे लिए परवाह करता है और वह अपना प्रेम तुम्हारे साथ बाँटने के लिए एक तरीका प्रदान करता है।

इन्सान के लिए यीशु मसीह का प्रेम इतना महान था कि वह आया और मानव जाति के सभी पापों के लिए क्रूस पर मरा। उसने तुम्हारे लिए अपना लहू बहाया जिससे तुम क्षमा पा सको और अनन्त जीवन पाओ।

इकलौती चीज जो वह तुमसे माँगता है कि तुम साधारण विश्वास में अपनी ओर उसके चरित्र और प्रेम पर भरोसा करते हुए और उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हुए, उसके पास आओ। "जो कोई भी प्रभु के नाम को पुकारेगा, वह बचाया जाएगा।" (प्रेरितों के काम २:२१)

बस प्रार्थना करें, *"प्रिय यीशु, मैं जानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ। मैं तुम्हें अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता हूँ। मुझे इतना प्रेम करने के लिए धन्यवाद कि तुमने मेरे लिए जान दी जिससे मैं तुम्हारे साथ अनन्त जीवन बिता सकता हूँ, आमीन।"*

वह वादा करता है कि वह कभी तुम्हे प्रेम करना बंद नहीं करेगा और न ही वह कभी तुम्हें छोड़ेगा या त्यागेगा (इब्रानियों १३:५)। बाइबिल पढ़ने, प्रार्थना करने, और एक अच्छे बाइबल पर विश्वास करने वाले चर्च में भाग लेने के द्वारा उसके साथ अपने संबंध का विकास करें।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च
वेबसाइट: www.vashichurch.com

हिन्दी अनुवादित संस्करण के विषय में

इस पुस्तिका की आत्मिक जीवन में कीमत को ध्यान में रखते हुए ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च की टीम के सदस्यों के योगदान से इसका अनुवाद और प्रकाशन किया गया है। स्थानीय तौर पर अधिक जानकारी के लिए आप हमें संपर्क कर सकते हैं:

ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च (GGNMC)
वाशी, नवी मुंबई, भारत
+ (91) 97020 81387
ई-मेल: mail@vashichurch.com
वेबसाइट: www.vashichurch.com

आत्मिक परामर्श के विषय में : www.vashichurch.com

ग्रेटर ग्रेस कलीसिया के विभिन्न स्थानों पर चर्च, प्रार्थना सभाएं, बाइबल स्कूल, यूथ सेवकाई, काउन्सेलिंग सेवकाइयां हैं कृपया जानकारी के लिए संपर्क करें :

मुंबई एवं उत्तर भारत : www.ggfmumbai.org
बेंगलुरु एवं दक्षिण भारत : www.ggfblr.org

पास्टर कार्ल एच स्टीवेंस की हिन्दी पुस्तिकाओं की सूची :

बस परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने दो
प्रतिदिन भोर में परमेश्वर से मुलाक़ात
परमेश्वर से खुलकर ग्रहण करो
पवित्र आत्मा से तुम्हारा सम्बन्ध कैसा है
बीमा न्याय आसनः दुःख या आनन्द में प्रस्तुति
सिंहासन के शब्द
साजिश का उत्थान

Grace Publications